शोध सारांश

शोध विषय : महापंडित राहुल सांकृत्यायन का वैज्ञानिक चिंतन बौद्ध धम्म के परिप्रेक्ष्य में

राहुलजी की जीवनी वैष्णव, आर्यसमाजी, बौद्ध तथा मार्क्सवादी इन चार पड़ावों से गुजरती थी। इसमें वैष्णव और आर्यसमाजी के रूप में "महापंडित राहुलजी ने वेद, पुराण, ब्राह्मणग्रंथ, उपनिषद तथा मनुस्मृतियों के अवैज्ञानिक और अमानवीय विचारों को तलाक दिया। इन विचारों से ईश्वरवाद, आत्मावाद, पुनर्जन्म, कर्मकांड, स्वर्ग- नरक, यज्ञ और चमत्कारों की भरमार उन्हे देशविघातक लगी और महापंडित से 'बौद्धानुरागी साम्यवादी' में रूपांतरित हुए।

उनके "विश्व की रूपरेखा" में विश्व की संरचना, परमाणुमय जगत, भौतिक तत्वों के स्वरूप, जीवनतत्व तथा मन और शरीर में सभी वेद, पुराण, ब्राह्मणग्रंथ, उपनिषद और मनुस्मृतियों की अवैज्ञानिकता धराशायी करने की क्षमता है।

उन्होने जन्म, जीवन एवं मृत्यु का जीवशास्त्र, खगोलभौतिकी, भौतिकी, रसायनशास्त्र, मानववंशशास्त्र के वैज्ञानिक आधार पर विश्लेषण करके पुराने ढर्रे के खोखले मानवताविरोधी अध्यात्मिकता का खंडन किया है। उनका वैज्ञानिक भौतिकवाद (मार्क्सवाद) भारतीय जनता को अविलंब आर्थिक सुधार का और सुखमय जीवन का सपना दर्शाता है।

"मानव समाज" में विश्व के सभी मनुष्यप्राणियों के विकास का इतिहास दिया है। उनके 'दर्शन दिग्दर्शन' में विश्व की सभी धार्मिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक अवधारणाओं का निचोड़ है। इसमें विश्व के मानव समूह के कल्याण का उद्देश्य है। उनके बौद्ध विचारों में काल्पनिक ईश्वरवाद के जगह पर वैज्ञानिक कार्यकारणवाद, अविनाशी, अजर, अमर आत्मावाद के जगह पर क्षण क्षण में परिवर्तनशील नामरूप सिद्धांत (क्षणिकवाद), पुनर्जन्म सिद्धांत के जगह पर भौतिकी, जीवशास्त्रीय तथा रसायनशास्त्रवादी वैज्ञानिक भौतिकवाद के पक्षधर हो गए।

भारतीय जनता के आर्थिक सुधारों को अविलंब लाने के संदर्भ में वह वैज्ञानिक भौतिकवाद (मार्क्सवाद) के पक्षधर थे।

बुद्ध धम्म का विश्वास, सांसदीय जनतंत्र के सांवैधानिक प्रमाणिकता के साथ जब बॅलेट पेपर के आधार पर सर्वांगीण रक्तहीन क्रांति लाई जा सकती है, ऐसे परिस्थिति में बुलेट पर आधारित रक्तरंजीत क्रांति लाना, यह रेल्वे की दो कभी न मिलनेवाली दो रेल्वे लाईनों के समान है। राहुल जी बुद्ध के अहिंसा को साम्यवादी हिंसा को एक ही म्यान में कैसा रखना चाहते थे, यह विषय खुद संशोधन के काबिल है। इसे मैं राहुल जी के ही शब्दों में अवैज्ञानिक 'विरोधी समागम' कहता हूँ।

Synopsis

Research summary

Subject :- A Scientific Study of Mahapandit Rahul Sankrityayan in the context of Buddhism

a) Rahul as a "Vaishnavi" and "Aryasamaji"

Dr. BhadantAnand claims that Rahulji had passed through four phases i.e. Vaishnav, Aryasamaji, Buddhist and Marxist. He had done a detail perusal of all Vedas and religious volumes for which he was called "Mahapandit". But later on he divorced with many of the ideologies which were anti-human and anti-scientific . In these, he thought that a belief in God, soul, rebirth, religious rituals, anti-human traditions based on unscientific concept which played a henious but brutally dangerous for India. So he was changed into "BuddhanuragiSamyawadi"(prone to many of the Buddhist and Marxistthoughts)

Bouddhanuragi Rahul

He studied all the facts of Buddhist philosophy and liked it to much extent . He wrote books on Pali Literature and so he was awarded "Rahul Sankrityayan" after his adoption of Buddhism .

His "VishwakiRuprekha"stands immortal when he explains the meaning of the construction of the world, galaxies, atomic world, properties of the physical things, vitamins,mindand body. He excels and defeats outright all the very unscientific ideologies of religious books especially Radhakrishnan and Gandhiji

He interprets the meaning of the birth, life and death from physical, chemical and astrological, psychological and biological standpoint.

His VaigyanikBhautikvad (Marxism) wants to bring economical happy life without delay for Indians . His "Manavsamaj" is virulent storage of the development of mankind.

His "Darshan and Digdarshan" is a wonderful record of anthologies of cultural and religious ideologies which contains humanistics approach relating to Buddhism.

a) An entirely foolish belief in God is rejected and the scientific cause-effect theory of Buddha is accepted.
b) Eternal and Immortal soul is rejected and ever-changing theory of mind based on physics, chemistry, biology, biophysics, astrophysics is accepted which is called Naam-Rupa theory.
c) Non-Physical rebirth theory is rejected while he advocated "VaigyanikBhautikvad" based on realism in modern life.

Marxist Rahul

He was a strong advocate of Marxist ideologies to bring about the fastest changes in the life of Indian people.

Buddha believed in, though longer one, but perfect way to human happiness in the form of parliamentary democracy based on "ballot paper" whereas Rahulji wants to combine non-voilent Buddhism without violent Marxism based on bullet to create economical equality.

This is like trying to bring two railway lines together which is a very imaginary job. (utopia)

This can be a subject of research how voilence and non-violence are put together in one shield. This is his own unscientific utopia which is clearly impossible. It is like bringing East and West in a single spot.

शोध सारांश

शोध विषय : महापंडित राहुल सांकृत्यायन का वैज्ञानिक चिंतन –बौद्ध धम्म के परिप्रेक्ष्य में

राहुलजी की जीवनी वैष्णव, आर्यसमाजी, बौद्ध तथा मार्क्सवादी इन चार पड़ाओं से गुजरती थी । इसमें वैष्णव और आर्यसमाजी के रूप में "महापंडित राहुलजी ने वेद, पुराण, ब्राह्मणग्रंथ, उपनिषद तथा मनुस्मृतियों के अवैज्ञानिक और अमानवीय विचारों से तलाक लिया । इन विचारों से ईश्वरवाद, आत्मावाद, पुनर्जन्म, कर्मकांड,स्वर्ग-नरक, यज्ञ और चमत्कारों की भरमार उन्हे देशविघातक लगी और महापंडित से 'बौद्धनुरागी साम्यवादी' में रूपांतरित हुए।

उनके "विश्व की रूपरेखा" में विश्व की संरचना, परमाणुमय जगत, भौतिक तत्वों के स्वरूप, जीवनतत्व तथा मन और शरीर में सभी वेद, पुराण, ब्राह्मणग्रंथ, उपनिषद और मनुस्मृतियों की अवैज्ञानिकता धराशायी करने की क्षमता है।

उन्होने जन्म, जीवन एवं मृत्यु का जीवशास्त्र, खगोलभौतिकी, भौतिकी, रसायनशास्त्र, मानववंशशास्त्र के वैज्ञानिक आधार पर विश्लेषण करके पुराने ढर्रे के खोंखले मानवताविरोधी अध्यात्मकता का खंडन किया है । उनका वैज्ञानिक भौतिकवाद (मार्क्सवाद) भारतीय जनता को अविलंब आर्थिक सुधार का और सुखमय जीवन का सपना दर्शाता है । "मानव समाज" में विश्व के सभी मनुष्यप्राणीयों के विकास का इतिहास दिया है । उनके दर्शन दिग्दर्शन में विश्व की सभी धार्मिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक अवधारणाओं का निचोड़ है । इसमें विश्व के मानव समूह के कल्याण का उद्देश्य है । उनके बौद्ध विचारों में काल्पनिक ईश्वरवाद के जगह पर वैज्ञानिक कार्यकारणवाद, अविनाशी, अजर, अमर आत्मावाद के जगह पर क्षण क्षण में परिवर्तनशील नामरूप सिद्धांत (क्षणिकवाद), पुनर्जन्म सिद्धांत के जगह पर भौतिकी, जीवशास्त्रीय तथा रसायनशास्त्रवादी वैज्ञानिक भौतिकवाद के पक्षधर हो गए।

भारतीय जनता के आर्थिक सुधारों को अविलंब लाने के लिए संदर्भ में वह वैज्ञानिक भौतिकवाद (मार्क्सवाद) के पक्षधर थे।

बुद्ध धम्म का विश्वास,सांसदीय जंनतंत्र के सांवैधानिक प्रमाणिकता के साथ जब बेलेट पेपर के आधार पर सर्वांगीण रक्तहीन क्रांति लाई जा सकती है । ऐसे परिस्थिति में बुलेट पर आधारित रक्तरंजीत क्रांति लाना, यह रेल्वे की दो कभी न मिलनेवाली दो रेल्वे लाईनों के समान है । राहुल जी बुद्ध के अहिंसा को साम्यवादी हिंसा को एक ही म्यान में कैसा रखना चाहते थे, यह विषय खुद संशोधन के काबिल है । इसे मैं राहुल जी के ही शब्दों में अवैज्ञानिक 'विरोधी समागम' कहता हूँ।